Hindi- 2019-20

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHIN / 2017 / 70792

ISSN : 2582-0907

खंड - 4, अंक - 1, पौष - फाल्गुन, 2076 / जनवरी - मार्च, 2020

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

Certified as
TRUE COPY

Ramniranjan
Ghatkopar (W)

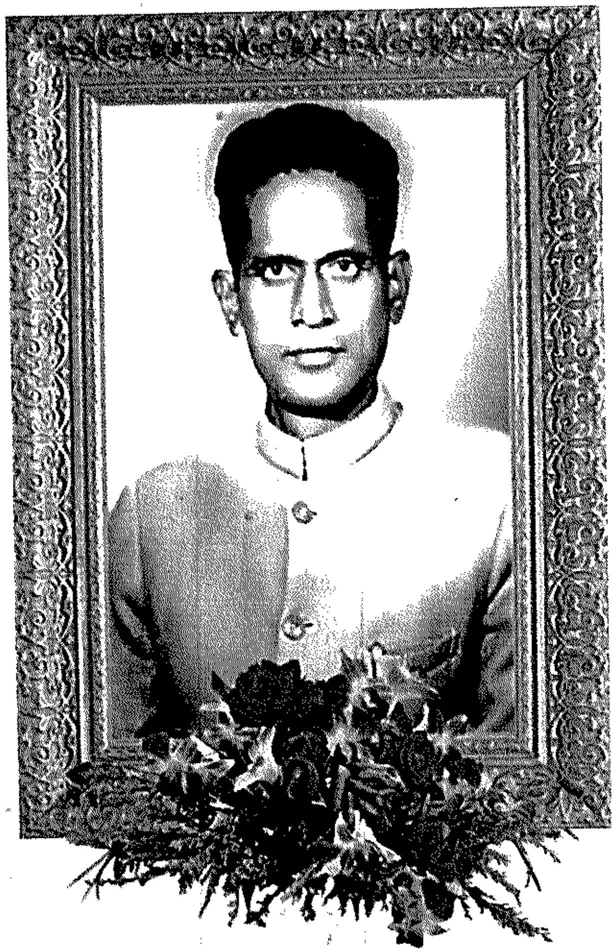

2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1995

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडू ग्राम में जन्मे, केंदीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जी; भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा हर वर्ष भारतीय मूल के विद्वानों को, विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-4, अंक-1, पौष-फाल्गुन, 2076/जनवरी-मार्च, 2020

संरक्षक
डॉ. कमल किशोर गोयनका
एम.ए., पी-एच.डी.
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल
डॉ. रंजना अरगडे
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला संकाय गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
ई-मेल : argada_51@yahoo.co.in

डॉ. दयाशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर,
आणंद-388 120 (गुजरात)
ई-मेल : tripathidayashankar11@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त
कुलसचिव, प्रोफेसर एवं डीन, भाषा-साहित्य एवं संस्कृति संस्थान तथा छात्र कल्याण
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर-382 030 (गुजरात)
ई-मेल : dralokgupt@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय,
नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : prof.pramods@gmail.com

डॉ. जसवंतभाई डी. पंड्या
डीन, कला संकाय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014. (गुजरात)
ई-मेल : jdpandya1958@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
डॉ. स्वर्ण अनिल
एम.ए., पी-एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarananilkhs16@gmail.com

कला एवं परिकल्पना
डॉ. विजय एम. ढोरे

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
एम.ए., पी-एच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - डॉ. सुनील कुमार
एम.ए., पी-एच.डी.
क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.सं. अहमदाबाद केंद्र
ई-मेल : dskmeerut@gmail.com

उप-संपादक - डॉ. मनोज पांडेय
एम.ए., पी-एच.डी.
सहायक प्रोफेसर, रा.सं.तु.म.वि.वि., नागपुर
ई-मेल : mkprtmnu@gmail.com

संपादक मंडल
डॉ. उषा उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
ई-मेल : ushaupadhyay2004@yahoo.co.in

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : drkrupadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ भोसले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : skbhosale3131@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : ramgopalsingh1913@gmail.com

डॉ. भूषण भावे
एसोसिएट प्रोफेसर, कोंकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस.एन. आर्ट्स एंड साईंस कॉलेज,
फार्मागुडी पोंडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushanbhavegoa@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान
अहमदाबाद केंद्र
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

खंड-4, अंक-1, पौष-फाल्गुन, 2076/जनवरी-मार्च, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टेडियम, बाल भवन, बापूनगर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250.00
(डाक व्यय प्रति अंक रु. 35.00 तथा
वार्षिक रु. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10.00 वार्षिक $ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कंपोजिंग : भानु ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संपादकीय

	प्रधान संपादक की कलम से...	प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय	04

आलेख

1.	गांधी जी की भाषा-नीति	डॉ. राम गोपाल सिंह	17
2.	गांधी जी और हिंदी कविता	डॉ. अनु मेहता	25
3.	प्रेमचंद के उपन्यासों में गांधी दर्शन	डॉ. महात्मा पांडेय	32
4.	गांधी : कल और आज	डॉ. राजेन्द्र परमार	37
5.	'सूत की माला' कविता में व्यक्त गांधी	डॉ. गेलजी भाटिया	42
6.	गांधी तेरी आज भी जरूरत है	डॉ. दिलीप मेहरा	46
7.	साहित्य और गांधी : 'हत्या एक आकार की' नाटक के विशेष संदर्भ में	डॉ. मिथिलेश शर्मा	50
8.	गांधी एक असंभव संभावना	डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय	56
9.	रंगमंच और 'गांधी की मृत्यु'	प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल	61
10.	महात्मा गांधी : चरित्र-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण	डॉ. मोहसिन खान	67
11.	विश्वशांति और मानव कल्याण के पथदर्शक महात्मा गांधी	डॉ. धनंजय चौहाण	77
12.	'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में संघर्षरत जीवन की यथार्थता	डॉ. सोमाभाई पटेल	84
13.	महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता और वर्तमान युग	डॉ. हरेन्द्र कुमार डॉ. रूपेश कुमार सिंह	91
14.	मूल्यों के प्रकाश में आदर्श व्यक्तित्व : महात्मा गांधी	रूबी वर्मा	98
15.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी-दर्शन (विचार) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (सत्य एवं अहिंसा के विशेष संदर्भ में)	डॉ. मनमोहन सिंह	105
16.	हिंदी की गांधीवादी काव्य-धारा	डॉ. रामविलास अग्रवाल	113
17.	गांधी जी की 150वीं जन्म जयंती	डॉ. कोकिला पारेख	119
18.	महात्मा गांधी और हिंदी	डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय	123
19.	छायावाद युग और गांधी विचारधारा	अलका आर. सोंदरवा	126
20.	महात्मा गांधी की भाषाई सोच और राजभाषा हिंदी	डॉ. दयाशंकर	132
21.	महात्मा गांधी और रामराज्य	डॉ. उर्मिला पोरवाल	140
22.	जन-जन के पथ-प्रदर्शक : महात्मा गांधी	डॉ. अर्जुन के. तड़वी	147
23.	लेखक सूची		150

साहित्य और गांधी : 'हत्या एक आकार की' नाटक के विशेष संदर्भ में

डॉ. मिथिलेश शर्मा

भारतीय राजनीति समाज और दर्शन के क्षितिज पर महात्मा गांधी का उदय सन 1920 ई. में हुआ । सन् 1920 ई. से लेकर जनवरी सन 1948 तक का समय राजनीति और दर्शन में महात्मा गांधी के चरम उत्कर्ष का समय है । महात्मा गांधी ने अपने विचारों के माध्यम से न सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित किया अपितु आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और साहित्यिक क्षेत्र को भी प्रभावित किया । आधुनिक विश्व पर महात्मा गांधी का उदय वस्तुत: एक अवतार जैसा था इस अवतार से साहित्य कैसे अभिभूत ना होता ? ऐसा नहीं है कि गांधी से पहले भारत में इस तरह के किसी आंदोलन की शुरुआत नहीं हुई, इससे पहले भी ऐसी बहुत-सी कोशिशें हुई, जिसके प्रवर्तक राजा राममोहन राय थे । मध्ययुगीन भारत में व्याप्त जड़ता, अंधविश्वास, मिथ्या–आडम्बर, कुरीतियों का विरोध कर सामाजिक-सांस्कृतिक समानता स्थापित करने का प्रयास ब्रह्म समाज की स्थापना से हो चुका था, तथा इतिहास एक से बढ़कर एक समाज सुधारकों को अपने पटल पर दर्ज करता जा रहा था । महादेव गोविंद रानाडे, सावित्रीबाई फुले, महात्मा फुले और दयानंद सरस्वती से लेकर स्वामी विवेकानंद तक सभी अपने-अपने तरीके से समाज को बहुत ही जमीनी स्तर से शिक्षित बनाकर एक अतिविकसित सभ्यता (अंग्रेजों) के खिलाफ तैयार कर रहे थे । दूसरी तरफ साहित्यिक पटल पर भारतेंदु हरिश्चन्द्र तथा उनके मंडल के लेखक जी-तोड़ कोशिश करके सामाजिक क्रांति लाने की कोशिश कर रहे थे, किन्तु इतिहास को युग के सबसे बड़े नायक की दरकार होती है और युग, उस नायक के जन्म और उसके परिपक्व होने का इंतजार बड़े ही संयम से कर रहा था । यह इसलिए कहना पड़ रहा है क्योंकि महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए ज्यादातर आंदोलनों को भारतेंदु हरिश्चन्द्र बहुत पहले ही अपनी पत्रिकाओं कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन और बालाबोधिनी के माध्यम से चला चुके थे किंतु इतिहास के पन्नों पर भारतेंदु हरिश्चन्द्र अमर होते हुए भी उस प्रकार के युगपुरुष नहीं बन सके जैसा महात्मा गांधी बन चुके हैं । इसका सबसे बड़ा कारण साहित्यकार और नेता के बीच का अंतर था । साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से जनचेतना तो ला सकता है किंतु नेताओं की तरह जन प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता । वहीं, नेता साहित्यकार द्वारा सुझाए रास्ते पर आवाम को अपने साथ सड़क पर उतारकर क्रांति ला सकता है और, मोहनदास करमचंद गांधी एक ऐसे ही नायक थे जिसे उसके कर्मों और विचारधारा ने युगपुरुष बना दिया ।

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण और जीवन का पुन: सृजन होता है । किसी भी विचारधारा या दर्शन का प्रभाव साहित्य पर परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप में पड़ता है । गांधी–विचार भारतीय राजनीति और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, इस बात में भी कोई मतभेद नहीं है कि गांधी विचारधारा के फलस्वरूप मानव जीवन के व्यवहार,

जागरूकता का संचार हुआ और आवाम ने अपनी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाई, अपने मूलभूत अधिकारों की माँग की और समानता और स्वतंत्रता का नारा बुलंद किया । जो विचारधारा भारतीय राजनीति और समाज में इतना बड़ा जन आंदोलन खड़ा कर देती है कि विश्व की सर्वशक्तिमान सभ्यता को भारत छोड़ना पड़ता है, उस विचारधारा से साहित्य कब तक अछूता रह सकता था । इतने बड़े परिवर्तन कर्ता विचारधारा के प्रभाव से सत्य, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, साम्यवाद, ग्रामीण उद्योग धंधे तथा विश्वबंधुत्व जैसी मूल प्रवृत्तियों को साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ, और जिस साहित्य में ऐसी मानवीय व समाज की कल्याणकारी प्रवृत्तियाँ अभिव्यक्त होंगी वह साहित्य कालजयी साहित्य कहलाने का अधिकारी अवश्य होगा ।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में हम गुलाम तो नहीं रहे, किंतु देश में अभी भी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विषमता और अराजकता अपनी जड़ जमाए हुए है । उपभोक्तावाद का मायाजाल समूचे विश्व को फँसाकर निगलने की तैयारी में लगा हुआ है । अपनी जरूरतों और महत्वाकांक्षाओं को रोकने में मनुष्य नाकामयाब हो रहा है । राजनीति विकृत होकर भ्रष्टाचार और अपराधीकरण को बढ़ावा दे रही है । बड़े-बड़े उद्योग और मशीनीकरण के चलते प्रकृति व पर्यावरण की समस्याएँ दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं । लगभग चालीस हजार गाँवों में आज भी बिजली का न होना, देश की करीब साठ प्रतिशत जनता का गरीबी रेखा के नीचे होना, बेरोजगारी–महँगाई का अपने रिकॉर्ड स्तर पर होना, भारत की सुदूर इलाकों में अब तक यातायात के साधनों का न होना, शिक्षा और रोजगार के नाम पर पलायन, विकास के नाम पर विस्थापन, जाति–धर्म के नाम पर शोषण, धार्मिक उन्माद तथा दंगे, सांप्रदायिक असहिष्णुता, औद्योगीकरण, बाजारवाद का दुष्परिणाम, पूँजीवाद इत्यादि स्थितियाँ अपना विकराल मुँह खोले खड़ी हैं जिससे हमें गांधीवादी विचारधारा की आवश्यकता, आज भी बड़ी शिद्दत से महसूस होती है । समकालीन साहित्यकार आज भी अपने तन-मन से गांधीवादी विचारधारा को साहित्य में उसी दमखम से स्थान देते हैं, जैसा कि वे स्वतंत्रता पूर्व भारत में इन्हीं प्रवृत्तियों को स्थान देते थे । अत: यह कहा जा सकता है कि गांधी विचारधारा आज के समय की जरूरत बन गयी है ।

लोकरंजन हेतु लिखे गए नाटक, लोक शिक्षा का सर्वोत्तम साधन है । संवाद की अभिव्यक्ति जितनी प्रभावपूर्ण नाटक के माध्यम से होती है उतनी अन्य किसी माध्यम से नहीं । 'गांधी जी की हत्या' होकर भी नहीं हुई क्योंकि गांधी जी आज भी अपने विचारों से हमारे बीच जीवित हैं । गद्य हो या पद्य, कोई भी विधा गांधी जी के विचारों के बिना पूर्ण नहीं है क्योंकि गांधीजी प्रतीक हैं- सत्य के, अहिंसा के, सद्भावना के, क्षमा के, विश्वबंधुत्व की भावना के, निडरता के, श्रेष्ठता के, सच्चे स्वराज्य प्रेमी के और सबसे अधिक मनुष्यता के ।

अनेक नाटककारों ने गांधी जी के विचारों को अपने नाटक में ढालकर लोगों तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है, जिनमें राजा राधिकारमण सिंह, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविंद दास, उदयशंकर [illegible] गोविंद वल्लभ पंत, पृथ्वीनाथ शर्मा, विष्णु प्रभाकर, मिलिंद माधव,

शुरू ।कए, उन्हें सेठ गोविंद दास के 'सिद्धांत स्वातंत्र्य' और 'सेवा पथ' नाटक में
ो देखा जा सकता है । गांधीजी के स्वदेश प्रेम और त्याग की भावना का सुंदर उदाहरण
शचंद्र माथुर द्वारा लिखित 'भोर का तारा' में देखा जा सकता है । गांधी जी के विचारों
भावित होकर अनेक नाटककारों ने हिंदू-मुस्लिम एकता की आवश्यकता को समझा और
अपने नाटकों में स्थान दिया । जैसे – राजा राधिकारमण सिंह द्वारा रचित 'अपना पराया'
: में दो युवतियों के माध्यम से सांप्रदायिकता को समाप्त करने का प्रयास दर्शाया गया
इसी कड़ी में सेठ गोविंद दास के नाटक 'पाकिस्तान' में भी सांप्रदायिक विद्वेष के
णामों से अवगत कराया गया है । नाटककार का मूल उद्देश्य नाटक में हो रहे सांप्रदायिक
को दर्शाना है । नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी ने भी सांप्रदायिक द्वेष को मिटाकर भाईचारे
ावना का प्रचार-प्रसार अपने नाटक 'रक्षाबंधन' में किया है ।

गांधीजी के छुआछूत या अस्पृश्यता संबंधी विचारों से समाज को अवगत कराने में
ा नाटककारों ने अपना योगदान दिया । जिनमें प्रमुख रूप से घनानंद बहुगुणा का 'समाज'
: है जिसमें सुधारवादी विशुद्धानंद और रूढ़िवादी धनदास के माध्यम से कथा को विस्तार
ा है, अंत सुखद है । इसी शृंखला में उदयशंकर भट्ट जी का नाटक 'मंदिर के द्वार
में अछूत बालक के मंदिर प्रवेश और पुजारी द्वारा उसकी निर्मम हत्या, बाद में पुजारी
दय परिवर्तन, सभी के लिए मंदिर में प्रवेश दिखाकर, समाज को एक नई दिशा प्रदान
: । साथ ही, हरिजन स्त्रियों की प्रगति को भगवतीचरण वर्मा के 'चौपाल' नाटक में
जा सकता है । अनेक नाटककारों ने गांधीवाद से प्रभावित होकर विविध सामाजिक,
तिक समस्याओं व धार्मिक आडंबरों को अपनी लेखनी का विषय बनाया और समाज
गरूकता लाने का सफल प्रयास भी किया ।

गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर अनेक नाटक लिखे गए पर गांधीजी जैसे
स पुरुष पर हिंदी साहित्य में सिर्फ़ एक ही नाटक दिखाई देता है, वह है ललित
न द्वारा रचित 'हत्या एक आकार की' । इस नाटक के बिना राजनीतिक बिंदुओं को
ना और सही अर्थों में गांधीजी को समझना अपूर्णता का प्रतीक होगा, अतः इसकी
करना आवश्यक हो जाता है । 'हत्या एक आकार की' नाटक आजादी से पूर्व राजनैतिक
ं के तहत आपसी वैचारिक मतभेद पर आधारित है । नाटक स्वतंत्रता संग्राम में अपने
की बलि देने वाले क्रांतिकारियों, तत्कालीन राष्ट्रीय संगठन और महात्मा गांधी के विचारों
र्ण विवेचन प्रस्तुत करता है । शुरुआत एक व्यक्ति की हत्या की साजिश से होती है ।
से एक युवक को इस कृत्य के प्रति शंका जाहिर करते हुए, इस पर अपने विचार
के लिए अपने साथियों से कहता है । आपसी सहमति न होने पर तीनों मिलकर मुकदमा
हैं जिसमें उन सभी आरोपों का जिक्र है जो गांधी जी पर इतिहास ने लगाए हैं ।
के आधार पर ये सभी आरोप सही भी साबित होते हैं किंतु उनकी व्याख्या करने पर
ी आरोप बेबुनियाद पाए जाते हैं ।

मुख्य विशेषता यह है कि इसमें गांधीजी की अनुपस्थिति है, फिर भी गांधीजी हैं और उनकी हत्या का षडयंत्र भी । नाटककार ने बड़ी कलात्मकता से गांधी की हत्या को एक आकार की हत्या कह कर मानवता के सिद्धांतों की रक्षा की है ।

गांधीजी के न होने पर भी उनका आभास पूरे नाटक में बना रहता है । नाटक में चार पात्र शुरुआत में यह मानते हैं कि गांधी द्वारा व्यवहार में लाए सिद्धांतों से भारत की हानि हुई है और हो रही है । अतः उन सिद्धांतों को नष्ट करने हेतु गांधी की हत्या का षडयंत्र रचा जाता है । उनमें से एक युवक का हृदय परिवर्तन होता है और उसके मन में शंका उठती है हम जो कर रहे हैं क्या वह उचित है ? 'शंकित युवक' के कारण षड्यंत्रकारियों के सामने एक नई परिस्थिति उत्पन्न होती है जिसका जिक्र स्वयं नाटककार पूर्व में करता है ।

"गांधी हत्या से कुछ समय पूर्व भूमिगत कमरे में चार षड्यंत्रकारी जमा होते हैं । पहले व्यक्ति पर हत्या करने का दायित्व है, दूसरे व्यक्ति ने योजना बनाई है और अधेड़ व्यक्ति ने षड्यंत्र की सफलता के लिए सभी सुविधाएँ जुटाई हैं । उनका साथी 'शंकित युवक' अपने साथियों को एक बार पुनः विचार करने को विवश करता है तो वे एक मुकदमे का नाटक रचते हैं और इसमें शंकित युवक को प्रतिनिधि के रूप में खड़ा कर देते हैं । पहला व्यक्ति सरकारी वकील की भूमिका निभाता है और 'शंकित युवक' पर तमाम देशद्रोह के आरोप लगाता है । दूसरा व्यक्ति सरकारी गवाह है और इतिहासकार के रूप में 'शंकित युवक' पर नज़र गड़ाये रखता है । 'शंकित युवक' अभियुक्त और उसके वकील की भूमिका में आकर अपना पक्ष स्पष्ट करता है । वहीं जज के रूप में अधेड़ व्यक्ति पहले से तय की हुई योजना के तहत निर्णय लेता है ।

पूरे नाटक पर दृष्टि डालने पर यह ज्ञात हो जाता है कि प्रस्तुत नाटक वैचारिक संघर्ष के ताने-बाने पर बुना गया है जिसमें 'शंकित युवक' व उसके साथियों का प्रबल सैद्धांतिक संघर्ष दिखाई देता है ।

षड्यंत्रकारी साथी 'हत्या' करने हेतु जाने को तैयार होते हैं तभी शंकित युवक पूछता है- "क्या यह ठीक है ?"

पहला व्यक्ति : "क्या ?"

शंकित युवक : "यही जो हम करने जा रहे हैं ।" (हत्या एक आकार की, पृष्ठ 10)

साथियों के दृढ़ निश्चय को देखकर 'शंकित युवक' ने साफ़-साफ़ शब्दों में कह दिया कि वह उनका साथ नहीं देगा । दूसरे व्यक्ति ने 'शंकित युवक' को छोड़कर चले जाने की बात को उचित नहीं समझा क्योंकि उन्हें भय था कहीं 'शंकित युवक' मुखबीर हो गया तो सभी के प्राण संकट में पड़ जाएँगे ।

ा युवक' भी गांधी का प्रतिनिधि बनकर अपने ऊपर लगाए गए आरोपों का खंडन है । शंकित युवक पर अधेड़ व्यक्ति द्वारा सत्य, अहिंसा और सांप्रदायिक एकता के का अभियोग लगा है । इस पर शंकित युवक बिना भय के मुस्कुराते हुए उन सभी डन करता है । सत्य को प्रमाण मानते हुए, शंकित युवक के शब्दों में- "इससे पहले ाग समय-समय मुझ पर दोष लगाते रहे हैं, लेकिन तब मैंने उनकी उपेक्षा ही की : मेरा ख्याल था कि झूठ का कोई जवाब न देना ही अच्छा रहता है, पर आज उन ों को मेरे विरुद्ध अभियोग माना गया है जो मेरे जीवन के आधार हैं । इसलिए मैं ाशेष सुविधा का लाभ उठाने का प्रयत्न करूँगा ।" (हत्या एक आकार की, पृष्ठ 29)... झूठ की नींव पर सत्य का महल खड़ा नहीं कर सकता था, इसलिए मैं अपनी लता को सफलता से ज्यादा अनमोल समझता हूँ ।" (हत्या एक आकार की, पृष्ठ 55)

अहिंसा के पुजारी गाँधी जी पर कई बार यह आरोप लगाए गए कि वे अहिंसा द्वारा ो कमजोर बना रहे हैं, जबकि ऐसा नहीं था । गाँधी जी अहिंसा के द्वारा स्वराज की कर रहे थे, क्योंकि एक महाशक्ति से लड़ने के लिए अहिंसा से बड़ा कोई हथियार हो सकता था । वे सभी देशवासियों का भला चाहते थे उन्होंने कहा भी है कि अहिंसा कारियों की वीरता से भी ऊँची वीरता है । अहिंसा की बात करते हुए शंकित युवक है- "आखिर वे अपने देश के शत्रु नहीं थे । उनके हर अनुयायी से मुझे यह मालूम है कि उन पर उनका प्रभाव जादू का-सा काम करता था । उनके दिलों में कभी कोई दायिक भाव अंकुरित नहीं हुआ । इसीलिए मैं उनके गुणों की बड़ाई करता हूँ । फर्क है कि वे हिंसा के पुजारी थे और मैं अहिंसा का भक्त हूँ । (हत्या एक आकार की, ठ. 51)

गांधी जी द्वारा कहे, किये कार्यों पर उनके साथी अनेकों प्रश्न खड़े करते हैं और त युवक द्वारा उन सभी आरोपों-प्रत्यारोपों का बेझिझक (नि:संकोच) उत्तर दिया जाता है से अभियोग पक्ष घबराता है । इतना ही नहीं, कई स्थलों पर दबाव बनाकर सुलह करने यत्न भी किया जाता है । पर, अभियोगी पक्ष अपने कार्य में असफल रहता है । गांधी के विचारों व कार्यों की सच्चाई सामने आने के बावजूद भी शंकित युवक को मौत का ना सुनाया जाता है । शंकित युवक द्वारा व्यंग्यात्मक हँसी के साथ इसका विरोध दर्शाया है और अपने बचाव पक्ष में अपनी बात कहने की याद दिलाता है । इस पर अधेड़ क शंकित युवक को अपनी बात कहने की इजाजत देता है । शंकित युवक के शब्दों "मेरा जीवन सत्य के प्रयोग में रहा है । अपने प्रयोगों के संबंध में मैं किसी तरह की ता का दावा नहीं करता । जैसे कोई वैज्ञानिक अपने प्रयोग नियम, विचार और सूक्ष्मतापूर्वक ा है, फिर भी उनसे होने वाले परिणामों को अंतिम नहीं कहता या यह नहीं कहता कि सच्चे परिणाम हैं, वैसे ही अपने प्रयोगों के संबंध में मेरी भी मान्यता है । हाँ, मुझे े कुछ प्रयोगों में असफलता भी मिली है, लेकिन वह मेरी असफलता है, उन शाश्वत

जाता है जो पहले से तय था – मुजरिम, मुकदमा ... था,वही अब भी है । अदालत यह सजा सुनाती है कि तुम्हें सरेआम... सरेराह गोली मार दी जाए ।" (हत्या एक आकार की, पृष्ठ 94) प्रायः ऐसा ही होता है और ऐसा ही हुआ जो पहले से तय था- 'गांधी जी की हत्या' । वास्तव में गांधी जी की हत्या का प्रतिरूप ही है यह नाटक जो समाज की सच्चाई का बयान बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है ।

गोली मारने की आवाज के बाद भी शंकित युवक का शरीर ही मरता है उसके विचार नहीं । आत्मा की तरह विचार भी अजर-अमर हैं जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष हमारे बीच जीवित रहते हैं, समय-समय पर हमें राह भी दिखाते हैं । शंकित युवक के शब्दों में- "तुम्हारा ख्याल है, दोस्त, तुमने उसे मार दिया है ? नहीं, दोस्त नहीं । तुमने एक आकार की हत्या की है – हाड़-मांस से भरे एक आकार की ।" (हत्या एक आकार की, पृष्ठ 95) इस नाटक में आपसी विचारों और सिद्धांतों की टकराहट के साथ राजनीति का प्रबल संघर्ष भी दिखाई देता है । महात्मा गांधी जी ने स्वतंत्रता प्राप्ति और भारत की अखण्डता के लिए जिन राजनैतिक सिद्धांतों को स्वीकारा था, उन सिद्धांतों के विरोध में कुछ हिन्दुओं ने यह बिगुल बजाया कि गांधी जी के सिद्धांतों से भारत को भारी हानि हुई है । गांधी जी के सिद्धांतों और इन हिन्दुओं के राजनैतिक सिद्धांतों में इतनी भिन्नता थी कि गांधी जी और हिन्दुओं के मध्य वैचारिक संघर्ष छिड़ गया । इस संघर्ष की परिणति गांधी जी की हत्या के साथ ही होती है । इस आपसी संघर्ष के फलस्वरूप ही 'हत्या एक आकार की' नाटक लिखा गया । इस नाटक का मुख्य उद्देश्य यह था कि गांधी जी पर जो आरोप लगाए गए थे वह बेबुनियाद साबित हुए । गांधी जी की हत्या एक विचार की हत्या थी पर विचार तो मरता ही नहीं । विचार कहीं न कहीं हम सबके बीच उपस्थित रहता है । अतः गांधी जी आज भी जीवित हैं और सदैव रहेंगे ।

संदर्भ ग्रंथ

(1) हत्या एक आकार की –ललित सहगल
(2) विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ– जयशंकर प्रसाद
(3) सिद्धांत स्वातंत्र्य, सेवा पथ, पाकिस्तान– सेठ गोविंद दास
(4) अपना पराया – राजा राधिकारमण सिंह
(5) समाज – घनानंद बहुगुणा
(6) मंदिर के द्वार पर – उदयशंकर भट्ट
(7) चौपाल – भगवतीचरण वर्मा
(8) हिंदी नाटक – बच्चन सिंह
(9) हिन्द स्वराज – महात्मा गांधी

Certified as TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala Colle
Ghatkopar (W), Mumbai-40008